



Category: Research Article

An Analytical Study of Thematic Roles Functioning in Hindi Syntax

H.I. Premathilake

ARTICLE DETAILS

Published Online & Printed
October-November 2024

Author:

H.I. Premathilake

Lecturer (Tem.)

Department of Languages
Faculty of Social Sciences and Humanities
Rajarata University of Sri Lanka
Email: hasanthi.rusl23@gmail.com

Keywords:

Hindi Lexicon, Hindi Syntax, Semantic Roles, Thematic Relations, Thematic Roles

Abstract

Thematic roles attempt to capture similarities and differences in verb meaning reflected in argument expression, with emergent generalizations contributing to mapping semantics to syntax. The verb is usually most directly responsible for the thematic role, while the argument specifies the identity of the participants of the sentence. The objective of the present study was to map the thematic roles of Hindi to identify the thematic relationship in Hindi syntax. The present study focuses on conceptualizing semantic roles and their status in theories of grammar and the lexicon in Hindi, as well as diverse and probably complementary ways of deriving or identifying them based on linguistic data. Data were gathered using library surveys and verified by Hindi native speakers. Data analysis was performed as an analytical study based on syntactic and semantic theories. The present analysis was carried out using thematic roles currently identified by linguists. The key research findings of this paper are based on identifying several features of thematic roles belonging to Hindi. This paper emphasized that different semantic roles can be assigned to arguments of different lexical semantics.

प्रस्तावना

प्रसंगबद्ध संबंधों को 1960 के दशक के मध्य और 1970 के दशक के प्रारंभ में उत्पादक व्याकरण (generative grammar)¹ में पेश किया गया था (गुबर, 1976), (फिलमोर, 1968), (जैकेंडॉफ, 1972) तथा ष्टकृतिक भाषा की अन्वितियों (arguments) को वर्गीकृत करने के एक तरीके के रूप में इस ष्टारणा को सोचा गया था जो व्याकरण में विशेष स्थान रखते हैं। जेफरी गुबर और चार्ल्स फिलमोर द्वारा 1960 के दशक के मध्य में उनकी पुरुआत के बाद से, प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ² भाषाई दृष्टिकोण के बीच एक मुख्य भाषाई अवधारणा और बहस का आधार बनायी गयी हैं, क्योंकि वाक्य-विचार और अर्थ-विचार (जिसे वाक्यविचार-अर्थविचार का अंतराफलक (syntax-semantics interface³) के रूप में भी जाना जाता है) के बीच संबंधों को समझने में उनकी क्षमता है। इस प्रकार अर्थ भाषा के सतही वाक्य-विन्यास को प्रभावित करता है। प्रसंगगत भूमिकाओं की धारणा विशेष रूप से भाषा और व्याकरण के कार्यात्मक और भाषा-तुलनात्मक (जलचवसवहपबंस) सिद्धांतों में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। कथ्यगत भूमिकाओं की ष्टारणा को 1960 के दशक में जेफरी गुबर और चार्ल्स फिलमोर द्वारा सैद्धांतिक भाषाविज्ञान में पेश किया गया था, और जैकेंडॉफ ने 1972 में इस पर कुछ पुरुआती काम भी किया था। प्रसंगगत पहलुओं पर किये गये इन अध्ययनों का केंद्र और वाक्य-विचार पद इनका प्रभाव आदि चॉम्स्की (Noam Chomsky) का वाक्य-विचारात्मक प्रवेश और सामान्य वाक्य-विचारात्मक दृष्टि से दूर रहे जो चॉम्स्की के aspects of the theory of syntax (1965) के भी परे थे।

अनुबंधन सिद्धांत में विशयों के आधार पर वाक्य में संज्ञाओं की भूमिका होती है। इस सिद्धांत के अनुसार हर क्रिया के साथ नियत समुद्दिष्ट संज्ञा पद होते हैं। इस समुद्दिष्ट संज्ञा पदों की विशयगत भूमिका मानी जाती है। जैसे- 'मंजु ने गोपाल को किताब दी'। 'देना' संज्ञा के साथ तीन समुद्दिष्ट संज्ञापद हैं जिसमें एक देने की प्रसंगबद्ध भूमिका, दूसरी 'लेने की' तथा तीसरी 'एक के पास से दूसरे के पास जाने की'। इस प्रसंगबद्ध भूमिका को व्याकरण में कथ्यगत भूमिका (थीटा रोल) भी कहा जाता है।

यह ध्याननीय है कि प्रसंगबद्ध भूमिका (thematic role) जिसे कुछ विद्वानों द्वारा theta role भी कहा जाता है और प्रसंगबद्ध संबंध (thematic relations) दो अलग तथ्य होते हैं। प्रसंगबद्ध संबंध

- 1 एक ष्टकृतिक व्याकरण जो एक भाषा का वर्णन तार्किक नियमों के एक समूह के रूप में काम करता है, ताकि उस भाषा के संभावित वाक्यों की अनंत संख्या उत्पन्न करने में सक्षम हो और उन्हें सही संरचनात्मक विवरण ष्टकु कर सके।
- 2 'प्रसंगबद्ध भूमिका' शब्द के लिए कहीं पर 'कथ्यगत भूमिका' शब्द मिला है, किंतु 'कथ्य' कहने पर 'पाठ' का अर्थ निकलने हेतु अंग्रेजी में ष्ट्जीमउम ष्ट के लिए उपयुक्त शब्द 'प्रसंग' समझना शोधकर्ता द्वारा यथोचित माना जाता है। अंग्रेजी में इसे ष्ट्जीमजं तवसम ष्ट भी कहा जाता है।
- 3 भाषाविज्ञान में, वाक्यविचार-अर्थविचार अंतराफलक वाक्यविचार और अर्थविचार के बीच की बातचीत है। इसका अध्ययन उन घटनाओं को शामिल करता है जो रूप और अर्थ के बीच संबंधों को समझने के लक्ष्य के साथ वाक्य-रचना और ष्टवार्थ दोनों से संबंधित हैं। विशिष्ट विशयों में विस्तार-सीमा ष्टवचमद्ध, बंधनकारक ष्टपदकपदहद्ध, और ष्टाब्दिक अर्थविचार ष्टसमगपबंस ष्टमउदजपबेद्ध के अंग शामिल हैं, जैसे, मौखिक पहलू ष्टमतईस ष्टचमबजद्ध और सांकेतिक विशिष्टता ष्टवउप. दंस पदकपअपकनंजपवदद्ध, ष्टमउदजपब उंबतवतवसमे, और अनिर्वचनीयता ष्टनदबबनंजपअपजलद्ध। औपचारिकतावादी और प्रकायवादी दृष्टिकोणों में अंतराफलक की कल्पना बहुत अलग तरीके से की जाती है। जबकि कार्यात्मकतावादी वाक्य-विन्यास की घटनाओं की व्याख्या के लिए ष्टवार्थ और व्यावहारिकता की ओर देखते हैं, औपचारिकतावादी ऐसी व्याख्याओं को वाक्य-विन्यास के भीतर ही सीमित करने का प्रयास करते हैं। इसे कभी-कभी रूपवाक्यविचार-अर्थविचार अंतराफलक ष्टवतचीवेलदजंगे. ष्टमउदजपबे पदजमतबिमद्ध या वाक्यविचार-शाब्दिक अर्थविचार अंतराफलक ष्टलदजंग.समगप. बंस ष्टमउदजपबे पदजमतबिमद्ध के रूप में जाना जाता है।

क्रिया के अर्थ और संज्ञा के अर्थ के बीच संबंधों की प्रकृति पहचानते हैं और प्रसंगबद्ध भूमिका यह है जो क्रिया के साथ संबंध रखनेवाली अन्वितियों की संख्या का निर्धारण करती है जो स्पष्टतः वाक्यात्मक धारणा है। मूलतः प्रसंगबद्ध मानदंड (theta criterion- θ -theory) यह है कि क्रिया से संबंध रखनेवाली एक अन्विति में कई प्रसंगबद्ध संबंध हो सकते हैं, किंतु उसमें केवल एक प्रसंगबद्ध भूमिका उपलब्ध है।

आमतौर पर सबसे प्रयोग होनेवाली प्रसंगबद्ध भूमिकाओं की सूची नीचे दी गयी है। (Dowty, D.,1989)

तालिका 1. प्रमुख प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का परिचय

प्रसंगबद्ध भूमिका	परिचय
प्रतिनिधि (agent)	संभवतः जानबूझकर एक çfrHkkxh (participant) जो क्रिया का व्यापार करने के लिए निर्दिष्ट करता है। उदाहरणतः मारना, खाना, मारना, तोड़ना, लात मारना, देखना आदि क्रियाओं के कर्ता।
मरीज़ (patient)	मरीज़ वह इकाई है जो किसी क्रिया के प्रभाव से गुजर रही है और अक्सर स्थिति में कुछ बदलाव से गुजर रही है। उदाहरणार्थ काटने, खाने और तोड़ने की वस्तुएँ हैं, लेकिन देखने, सुनने और प्यार करने की नहीं।
भोक्ता (experiencer)	एक प्रतिभागी जिसे किसी वस्तु के बारे में जागरूक होने के रूप में जाना जाता है। उदाहरणः प्यार करनेवाला कर्ता या परेशान करने की वस्तु।
कथ्य (theme)	एक प्रतिभागी जिसे अपनी स्थिति बदल देने या अपनी स्थिति में होने की विशेषता होती है। उदाहरणः देने या लेने की वस्तुएँ और चलने या मरनेवाला कर्ता।
स्थान (location)	यह कथ्यगत भूमिका संज्ञा-धातु से जुड़ी है जो वाक्य में स्थान को व्यक्त करती है। उदाहरणः रखने, बनाने, जानने के विषय और स्थनीय संबंध-सूचक अव्यय पदबंध (locative PPs)।
स्रोत (source)	वस्तु जिससे गति आगे बढ़ती है। उदाहरण- खरीद और वादे के विषय और वंचित, मुक्त, इलाज की वस्तुएँ।
लक्ष्य (goal)	वस्तु जिसपर गति आगे बढ़ती है। उदाहरणः प्राप्त करने और खरीदने के विषय और बताने और देने की संप्रदान कारक वस्तुएँ (dative objects)।
प्रोत्साहन (stimulus)	प्रतिभागी जो संवेदी या भावनात्मक तथ्यों को प्रेरित करती है, जानबूझकर नहीं।
साधन (instrument)	वस्तु जो क्रिया का पालन करती है।
प्रभाव या स्वाभाविक कार्य (force or natural cause)	बिना सोचे-समझे किया गया कार्य किया जाता है।

प्राप्तकर्ता (recipient)	वह इकाई जिसके लाभ के लिए क्रिया होती है।
रीति (manner)	जिस तरह से किसी कार्य को अंजाम दिया जाता है।
उद्देश्य (purpose)	वह कारण जिसके लिए क्रिया की जाती है।
कारण (cause)	पहले स्थान पर कार्रवाई होने का क्या कारण था।

मौलिक वाक्य—विचार में वाक्य का प्रत्येक पदबंध व्याकरणिक और अर्थवान हिस्सा होता है। उदाहरणार्थ, 'गोपाल ने कुत्ते को मारा' वाक्य में 'गोपाल' कर्ता है, 'कुत्ते को' कर्म है और 'मारा' क्रिया है जो वाक्य का मौलिक संरचना है, जबकि प्रसंगबद्ध भूमिका के क्षेत्र में वाक्य के प्रत्येक पदबंध के लिए उपयुक्त भूमिका दिया जाता है; उदाहरण के लिए, मारने की क्रिया जिसके द्वारा किया जाता है, वह प्रतिनिधि है : गोपाल, 'कुत्ता' क्रिया का कथ्य है। अंग्रेजी वाक्य 'John kicked the ball' में 'John' कर्ता है, 'kicked' क्रिया है और 'the ball' कर्म है; कर्ता + क्रिया + कर्म अंग्रेजी की वाक्य संरचना है। इसकी प्रसंगबद्ध भूमिका, 'John' प्रतिनिधि है, 'kicked' अभियान है और 'the ball' कथ्य है। इसी वाक्य को कर्मवाच्य बना, वाक्य ऐसा होगा : The ball was kicked by John। इस वाक्य में 'The ball' कर्ता है, 'was kicked' क्रिया है और 'John' कर्म है, किंतु अभी भी वाक्य का प्रतिनिधि 'John' है, अभियान 'kicked' है और कथ्य 'the ball' है।

व्याकरण और अन्विति की दृष्टि से सही होते हुए भी वाक्य अर्थ—संगति (semantic concordance) की दृष्टि से दोषपूर्ण हो सकता है, जैसे—

*कल मैंने अपने विचारों को खाया।

*मेरी गाड़ी को कल से बुखार है।

ये वाक्य क्यों असंगत हैं? इस बात का उत्तर प्रसंगबद्ध भूमिकाओं के आधार पर प्रसंगबद्ध संबंध दे सकता है। यह ध्यान देने की बात है कि शब्द जहाँ, d और व्याकरणिक रचना है, वहीं अर्थ के स्तर पर किसी वस्तु या व्यापार/प्रकार्य (action) का प्रतीक (symbol) भी है। जिस प्रकार वाक्य में व्याकरण की रचना संबंधी अपनी कुछ आकांक्षाएँ होती हैं, उसी तरह अर्थ की भी कार्य—व्यापार संबंधी अपनी कुछ आकांक्षाएँ होती हैं। 'खाना' कार्य—व्यापार या प्रकार्य का कर्म कोई खाद्य पदार्थ ही हो सकता है, विचार नहीं। इसी प्रकार 'बुखार' किसी प्राणी को ही हो सकता है, निर्जीव गाड़ी को नहीं। अतः वाक्य के हा घटक को अर्थ की दृष्टि से भी अन्य घटकों के अनुकूल होना चाहिए, अर्थात् उनके बीच अर्थ—संगति होनी चाहिए।

चार्ल्स फिलमोर (1968) द्वारा लिखित लेख 'The case for case' प्रसंगबद्ध भूमिकाओं की वर्तमान समझ के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। वृत्त व्याकरण (case grammar) गहरे मामलों (यानी, समकालीन शब्दावली में प्रसंगबद्ध भूमिकाओं) का अध्ययन करके अंग्रेजी वाक्यों की सतह वाक्यविचारात्मक संरचना का विश्लेषण करता है, जैसे कि प्रतिनिधि, कर्म, संपादन—कारक, स्थान या साधन, जो वाक्य की

क्रियाओं द्वारा अपेक्षित है। उदाहरणार्थ, 'देना' क्रिया कभी प्रतिनिधि, कभी मरीज़ और कभी संपादन—कारक बन जाता है। क्रियाएँ एक निश्चित संख्या में प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का चयन करती हैं जो इसके कारक—ढाँचे का निर्माण करती हैं और कोई भी एक भूमिका वाक्य में केवल एक बार हो सकती है। उसके विपरीत, स्थान जैसी वैकल्पिक भूमिकाओं और प्रतिनिधि जैसी अनिवार्य भूमिकाओं को वाक्य में छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि उसमें अव्याकरणिक वाक्य बनने का भय है (उदाहरण : *उसे सेब दिया)। फिलमोर का सिद्धांत स्पष्ट रूप से वाक्य—विचार और अर्थ—विचार का अंतरण करता है, जिनका अर्थ कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य व्याकरण की प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ समान हैं, जबकि भूमिका की औपचारिक अभिव्यक्ति प्रत्येक संदर्भ में अलग है। यह विचार प्रसंगबद्ध भूमिकाओं के लिए कई कार्यात्मक और प्रतीकात्मक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है जो किसी विशेष भाषा को स्वतंत्रता देने का प्रयास करता है और इस प्रकार अन्य प्रसंगबद्ध भूमिकाओं के किसी भी प्रकार के व्याकरणिक संबंधों का समर्थन किये बिना मौलिक रूप से विभिन्न भाषाओं के माध्यम से प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का अध्ययन करना संभव होता है, जैसे कर्ताकारक (nominative case) या पूर्व—क्रिया स्थिति (pre-verbal position)।⁴

ग्रुबर (1965) के बाद व्याकरण के लिए औपचारिक दृष्टिकोण में प्रसंगबद्ध संबंधों को स्वीकार किया जाता है, किंतु साहित्यिक विमर्श में उनकी विविध स्थिति द्रष्टव्य है। भले ही चॉम्स्की के अध्ययन प्रसंगबद्ध संबंधों (thematic relations) जैसी अर्थविचारात्मक धारणाओं और थेटा भूमिकाओं (theta roles) (रेनहार्ट, 2002) जैसी वाक्यविचारात्मक धारणाओं के बीच अंतर करते हैं, जिन्हें विशेष अन्विति की स्थिति से प्राप्त प्रसंगबद्ध भूमिकाओं के रूप में माना जाता है (कार्नी 2002)। दूसरी ओर से कई अध्ययनों ने दोनों शब्दों का परस्पर समतुल्य प्रयोग किया है। संबंधपरक व्याकरण (relational grammar) (पर्लमुटर और पोस्टल, 1984), government और binding (बेकर] 1988½] "ाब्दिक—कार्यात्मक वाक्य—विचार (lexical-functional syntax) (ब्रिसनन, 2001) और दूसरे सिद्धांतों ने वाक्य के पद—क्रम और अन्विति के नियमों को पकड़ने हेतु मौलिक प्रसंगबद्ध संबंधों के अनुक्रम का प्रयोग किया है। हेल और केसर (1993, 2001) कहते हैं कि प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ गौणपरक होती हैं और अनावश्यक भी। उसी से सहमति देते हुए जैकेंडॉफ (1983, 1990) के अध्ययन, साथ ही हाल ही में क्यूलिकवर और जैकेंडॉफ (2005) भी अर्थवैज्ञानिक संरचना की अभिव्यक्ति का प्रस्ताव करते हैं कि प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ काफी हद तक निरर्थक हैं, जबकि वर्तमान समय के भाषावैज्ञानिकों की ऐसी मान्यता है कि उत्पादक वाक्य—विचार (generative syntax) के विषय में वाक्य की सुडौलता (well-formedness) की पुष्टि करने के लिए थीटा सिद्धांत की अतिआवश्यकता होती है।

भूमिका और संदर्भ व्याकरण⁵ विधेय—विशिष्ट प्रसंगबद्ध भूमिकाओं और विधेय—वर्ग पृथक्करण के बीच अंतर करता है जिसे प्रसंगबद्ध संबंध कहा जाता है। उदाहरणार्थ, अंग्रेज़ी वाक्य 'Frodo saw the ring' में 'Frodo' द्रष्टा है और 'the ring' देखा गया वस्तु है (प्रसंगबद्ध भूमिका), जबकि 'Frodo' एक भोक्ता

4 Later work by Fillmore et al. on Frame Semantics and the FrameNet project (see <https://framenet.icsi.berkeley.edu/fndrupal/>) distinguish between semantic roles and frame elements. While the latter merely correspond to event participants involved in semantic frames evoked by lexical units, semantic roles are their 'linguistically motivated abstractions in that they pick out specifically those properties that tend to display the same behavior in morphosyntax'. (Fried & Ostman, 2004, p.42)

5 संदर्भ व्याकरण तममितमदबम हतंतउतद्व एक भाषा में प्रमुख व्याकरणिक तथ्यों का विवरण है जो उदाहरणों के साथ चित्रित किया जाता है।

भी है और 'the ring' प्रोत्साहन भी (प्रसंगबद्ध संबंध)। महत्त्वपूर्ण रूप से, हालांकि, प्रसंगबद्ध संबंध इस सिद्धांत में मौलिक नहीं है, बल्कि विधेय और अन्विति के विशेष अर्थवैज्ञानिक अपघटन प्रतिक्रिया (semantic decomposition relations) के विशिष्ट अन्वितियों को दिया गया वर्णनात्मक प्रतीक है।

कार्यात्मक दृष्टि से उन्मुख कई भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणों में उपरोक्त प्रसंगबद्ध भूमिकाओं को दो गौण भूमिकाओं में वर्गीकृत किया गया है : actor और undergoer जिसे सामान्यीकृत प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ (generalized semantic roles) तथा आद्य भूमिकाएँ (proto-roles) भी कहा जाता है। गौण प्रसंगबद्ध भूमिकाओं की इस धारणा को सन् 1977 में वैन वैलिन की पी.एच.डी शोध द्वारा पेश किया गया था, जिन्हें उन्होंने भूमिका और संदर्भ व्याकरण (role and reference grammar) के विषय में विकसित किया और बाद में उसके आधार पर कई भाषावैज्ञानिक प्रवेशों में अनुकूलित किया। वैन वैलिन के अनुसार जबकि प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ अर्थवैज्ञानिक संबंधों को निर्धारित करती हो और कर्ता और सीधा कर्म का संबंध वाक्य-विचारात्मक हो, ऐक्टर और अन्डर्गो वाक्यविचार-अर्थविचार के अंतराफलक (syntax-semantics interface) पर संबंध होते हैं। निम्नलिखित सूची दर्शाती है कि प्रसंगबद्ध संबंध व्यक्तिगत विधेय और उनकी अन्विति से कैसे संबंधित है :

प्रसंगबद्ध संबंध सातत्य (वैन वैलिन और लापॉला 1977: 127)

(क) 1st argument of DO (x,) : प्रतिनिधि

(ख) 1st argument of DO (x,) : प्रेरक (effector), ग्राहक (consumer), सर्जक (creator), आरंभक (mover) आदि।

(ग) 1st argument of predicate (x, y): धारक (possessor), भेक्ता, आकांक्षी (wanter), स्थान आदि।

(घ) 2nd argument of predicate (x, y): धारक, सर्जना, कथ्य, उपभुक्त, भोक्ता, आकांक्षा, प्रदर्शन आदि।

(ङ) Argument of state predicate (x): मरीज़, सत्ता (entity)।

सबसे आधुनिक ज्ञान क्रॉफ़्ट (2012) के अध्ययन में पाया जाता है जो पिछले बीस वर्षों में कई अध्ययनों में एक ही लेखक द्वारा पहले से ही कहे गये विचारों पर आधारित है और सैद्धांतिक महत्व के बिना काल्पनिक शब्दों के रूप में प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का नाम उपयोग किया गया है। क्रॉफ़्ट के अध्ययन में यथाकथित बल-गतिशील दृष्टिकोण (force-dynamic approach)⁶ भाषा की कारण संबंधी संरचना के लिए महत्त्वपूर्ण संदर्भ दिया जाता है, जिसमें सबसे प्रमुख रूप से आरंभकर्ता और समापक बिंदु शामिल होते हैं जो चाहे भौतिक (physical) या मानसिक (mental) हो सकते हैं। अंग्रेज़ी वाक्य 'Sue broke

6 Croft's work has elaborated notions proposed by both Leonard Talmy in the 1970s and 1980s and Ronald Langacker in the 1990s for the study of how purported real-world events are conceptualized and expressed in natural languages.

the coconut for Greg with a hammer' (क्रॉफ्ट 2012: 206) में आरंभकर्ता (भौतिक) 'Sue' वाक्य का कर्ता है, साथ-साथ समापक बिंदु (भौतिक) 'coconut' कर्म है और एक पूर्वपद तिर्यक (antecedent oblique) 'a hammer' और एक आगामी तिर्यक (subsequent oblique) 'Greg' भी हैं जो क्रमशः साधन और लाभार्थी (beneficiary) के अनुरूप हैं। 'Sue' से आरंभित करणीय श्रृंखला 'hammer' से 'coconut' तक यथाकथित सकर्मक अन्विति में क्रिया 'break' द्वारा बनाया गया एक खंड कहा जाता है, साथ में अंतिम खंड, यानी 'Greg' अंतर्गत पदबंध, संबंध-सूचक 'for' द्वारा निर्माण किया गया है। Most importantly, Croft's approach does not resort to the notion of semantic roles at all, either reified as separate semantic units or even defined as positions in argument structure (p. 207): instead, there is a direct mapping between so-called semantic representation (i.e., the causal chain with its verbal profile) and argument roles (i.e., subject, object, and obliques).

शोध-विधि

प्रस्तुत शोध के लिए गुणात्मक प्रवेश के आधार पर लिखित लेखों के द्वारा आवश्यक दत्त-सामग्री का संकलन किया गया है। उसके अधीन पाँच प्रकार के वाक्य: सकर्मक क्रिया सहित वाक्य, अकर्मक क्रिया सहित वाक्य, योजक क्रिया सहित वाक्य, अनुभवपूर्वक क्रिया सहित वाक्य तथा कर्मणी प्रयोग सहित वाक्य—वाक्य के तीन प्रकार: सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य की दृष्टि से संकलित किया गया। फिर उन दत्त-सामग्री का विश्लेषण हिंदी के प्रसंगबद्ध संबंधों के आधार पर किया गया।

शोध का साधन मानक हिंदी की लिखित भाषा के वाक्य हैं। लिखित मानक हिंदी की बहुत पुस्तकें होती हैं। साधारणतया उन सभी पुस्तकों में हर प्रकार के वाक्यों का समन्वय होता है। कुछ पुस्तकें सैद्धांतिक होती हैं और कुछ साहित्यिक। वैसे भी हो, उनमें समान रूप से विविध क्रियाएँ, समुच्चयबोधक, निपात, क्रियाविशेषण आदि अंतर्गत आते हैं। इसलिए शोधकर्ता द्वारा Quata नमूना-चयन विधि के आधार पर वाक्य का संकलन किया गया है। दत्त सामग्री का विश्लेषण कैनी (कैनी, 2006) के सैद्धांतिक ढाँचे के अनुसार किया गया है, जिसका प्रस्तुत शोध का विश्लेषणात्मक ढाँचे के रूप में भी प्रयोग किया है। इसमें हिंदी की क्रियाओं और उनके प्रकार का अन्वेषण करने की कोषिष की गयी है और उत्पादक व्याकरण (Generative Grammar) के संदर्भ में उनके कार्य, स्थिति और महत्व को भी विश्लेषण किया गया है। मानक हिंदी की लिखित भाषा के वाक्य प्रस्तुत शोध की सीमा है। साथ-साथ अध्ययन की दृष्टि से प्रसंगबद्ध भूमिका एवं प्रसंगबद्ध संबंध — दो नियम इस शोध का आधार है।

विचार-विमर्श

दत्त-सामग्री का विश्लेषण कार्नी के सैद्धांतिक ढाँचे (कैनी, 2006) के आधार पर किया गया है, जिसका उपयोग प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक ढाँचे के रूप में भी किया जाता है। इसमें हिंदी की क्रियाओं और उनके प्रकारों का पता लगाने और वाक्यों में उनके कार्य, स्थिति और महत्व का अध्ययन करने की कोशिश की गयी है। इसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि कैसे हिंदी की क्रियाएँ वाक्यों में अपने तर्कों को अलग-अलग प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ प्रदान करती हैं। हिंदी क्रियाओं की तर्क संरचना (argument structure) को हिंदी क्रियाओं के साथ प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का अध्ययन करने के लिए स्थापित किया गया है।

प्रतिनिधि (Agent)

वाक्य 1 और दो क्रिया की तर्क संरचना स्थापित करते हैं और क्रिया द्वारा उनके तर्कों को निर्धारित की गयी प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका का विश्लेषण करते हैं।

1. माधव हिंदी में बात करता है।

S.M.SNG OBJ.PREP VT.SNG.PRS

2. बच्चे मछली पकड़ते हैं।

S.M.PLUR DRT OBJ VT.PLUR.PRS

वाक्य 1 और 2 के दा-दो तर्क होते हैं: वाक्य 1 में पहला तर्क है 'माधव' और दूसरा है 'हिंदी में'। वाक्य 2 का पहला तर्क 'बच्चे' है और दूसरा तर्क 'मछली' है। तर्क 'माधव' वाक्य का कर्ता है जो व्यक्तिवाचक एकवचन पुल्लिंग संज्ञा है। इसका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के स्थान पर किया गया है और इसमें वाक्य में क्रिया का संचालन करने की क्षमता होती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि 'माधव' तर्क वाक्य का कर्ता या प्रतिनिधि है जो वाक्य में कुछ बनाये रखने या कुछ करने की क्रिया करता है। वाक्य 2 का 'बच्चे' तर्क भी वही नियम के अनुसार होता है। वाक्य 2 का दूसरा तर्क 'मछली' है जो वाक्य का कर्म होता है। यह वह तर्क है जो वाक्य की कार्रवाई के बल के अधीन हो। वह क्रिया का संचालक नहीं है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि यह वाक्य का कथ्य (Theme) प्रसंगबद्ध भूमिका है।

3. a. राम आम खाता है।

S.M.SNG DTR OBJ VT.SNG.PRS

b. राम के द्वारा आम खाया जाता है।

OBJ S.M.SNG VT.PV.SNG

हिंदी की मौलिक वाक्य संरचना है- कर्ता + कर्म + क्रिया, अपितु कर्मवाच्य वाक्यों में वह संरचना कर्म + कर्ता + क्रिया में बदलती है। पहले की गयी वर्णन के अनुसार वाक्य (3) में दो तर्क होते हैं। पहला 'राम' है जो खाने की क्रिया का संचालक होता है, इसलिए वह वाक्य का प्रतिनिधि है। दूसरा तर्क 'आम' है जिसका प्रयोग खाने की क्रिया को संपन्न बनाने के लिए प्रतिनिधि द्वारा किया जाता है, इसलिए वह कथ्य है। वाक्य (3इ) उसी वाक्य का कर्मवाच्य वाक्य होता है, जिसकी वाक्य संरचना पहले से अलग है, फिर भी वाक्य के तर्कों की प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का कोई परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि तर्कों की प्रसंगबद्ध भूमिका इस बात पर आधारित है जो वाक्य की क्रिया से वाक्य के अन्य घटक किस प्रकार का अर्थगत संबंध रखता है। अर्थात् वाक्य (3इ) में 'राम' और 'आम' क्रमशः प्रतिनिधि और कथ्य ही होते हैं।

भोक्ता (Experiencer/ Perceiver)

भोक्ता वह प्रसंगबद्ध भूमिका है जो वाक्य में कुछ अनुभव करता है।

4. आपको सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।

ACC ADV DAT OC.CP.ACC VI.PST.

5. मामा ने चाँद को देखा।

S.M.SNG DAT VT.PST

वाक्य 4 में 'होना' क्रिया के साथ दो तर्क (दो संज्ञा पदबंध) और एक मानार्थ पदबंध (Complement Phrase) होते हैं। यहाँ 'हुई' क्रिया से लगने का अर्थ निकलता है। वाक्य के दो तर्क ये हैं: 'मुझे' और 'खुशी'। पहला संज्ञा पदबंध 'मैं' वाक्य में कोई क्रिया नहीं करता, लेकिन यह वाक्य में सिर्फ क्रिया (एक भाव के रूप में) को महसूस करता है या अनुभव करता है; यह वाक्य में 'खुशी' की भावना महसूस करता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि तर्क 'मुझे' वाक्य का भोक्ता है और उसमें भोक्ता प्रसंगबद्ध भूमिका है। दूसरा तर्क 'खुशी' एक भाववाचक संज्ञा (Abstract noun) है, जिसे देखा या छुआ नहीं जा सकता, बल्कि सिर्फ महसूस किया जा सकता है। वह वाक्य की कर्म (Object) है और उसमें कर्म कारक (Accusative case) शामिल है, क्योंकि उसका उपयोग वाक्य में कर्म के रूप में किया जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि यह तर्क वाक्य की कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका निभाता है।

वाक्य (5) में 'देखना' क्रिया के दो तर्क होते हैं। वे हैं 'मामा ने' और 'चाँद को'। पहला तर्क व्यक्तिवाचक एकवचन है, जिसमें वाक्य की क्रिया का प्रकाय करने की क्षमता शामिल है। लेकिन व्यक्तिवाचक एकवचन पुल्लिंग संज्ञा वाक्य में न क्रिया का संचालक है न क्रिया के प्रकाय का लाभ उठाता (लाभार्थी (Beneficiary))। आमतौर पर वह प्रकाय को चलानेवाले कर्ता के रूप में वाक्य में काम करता है या एक अप्रत्यक्ष कर्म (Indirect object) के रूप में वाक्य में लाभ प्राप्त करता है। उल्लिखित कोई भी मामला वाक्य (5) में नहीं है; 'मामा' तर्क वाक्य में न तो कोई प्रकाय करता है और न ही वाक्य में लाभ प्राप्त करता है, लेकिन यह एक ऐसी वस्तु के रूप में चाँद को अनुभव करता है जिसे हम नहीं देख सकते। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि 'मामा' तर्क वाक्य में भोक्ता है, जो वाक्य में कुछ अनुभव करता है और उसमें भोक्ता प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। दूसरा तर्क 'चाँद' वाक्य का कर्म या कथ्य है और इसमें वाक्य में कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका है।

कथ्य (Theme)

कैनी (2006) के अनुसार कथ्य वह प्रसंगबद्ध भूमिका है जो प्रकाय के अधीन है; किसी व्यक्ति या कियी वस्तु द्वारा स्थानांतरित होती है; अनुभव की जाती है या मानी जाती है।

6. मैं आपका गाना सुन रहा हूँ।
S.PRON.M.SNG.NOM PC DRT OBJ VI.P.PR
7. लड़का गेंद खेलता है।
S.M.SNG DRT OBJ.M VT.PRES

वाक्य (6) में क्रिया पदबंध 'सुन रहा हूँ' ds साथ दो तर्क जुड़े हुए हैं। पहला तर्क 'मैं' वाक्य का कर्ता या प्रतिभागी है जो वर्तमान में किसी के गीत को सुनने की क्रिया करता है और वह वाक्य में कर्ता कारक है। दूसरा तर्क 'आपका गाना' वाक्य की कर्म है जो वर्तमान में वाक्य के प्रकार्य से गुजरता है (जो कर्ता द्वारा सुना जा रहा है)। वह यह तर्क है जो वाक्य का केंद्रबिंदु या कथ्य है और वाक्य में कर्म कारक है, क्योंकि उसका प्रयोग वाक्य की कर्म के रूप में किया जाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वह वाक्य का कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका है।

वाक्य (7) में दो चर्चित तर्क होते हैं: 'लड़का' और 'गेंद'। तर्क 'लड़का' वाक्य का कर्ता या प्रतिभागी है, जिसके साथ कर्ता कारक होता है और वह वाक्य का प्रतिभागी प्रसंगबद्ध भूमिका है। दूसरी ओर, तर्क 'गेंद' कर्म के रूप में कार्यरत संज्ञा पदबंध है, जिसमें किसी भी प्रकार्य को करने के बजाय किसी वस्तु या किसी व्यक्ति के प्रकार्य से गुजरने की क्षमता होती है। यह ऐसा तर्क है जो अपने बल पर को प्रकार्य नहीं कर सकता, लेकिन यह वाक्य के प्रकार्य से गुजर सकता है। वाक्य के संदर्भ से पता चलता है कि यह वाक्य का केंद्र या कथ्य है और इसमें कर्मकारक शामिल है। इसलिए वह वाक्य का कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका होता है।

लक्ष्य (goal)

कैनी (2006) लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका को उस इकाई के रूप में परिभाषित करता है, जिसकी ओर वाक्य में गति होती है। लक्ष्य में अमूर्त गति (Abstract motion) भी शामिल हो सकती है।

8. शर्मा स्कूल चला गया।
S.M.SNG N.DAT.PP VI.PST.VD
9. हम अपने घर आये।
S.M.PRON.PLUR 3R N.DAT VI.PST.PLUR

वाक्य (8) में दो तर्क होते हैं: 'शर्मा' और 'स्कूल'। पहला तर्क वाक्य का प्रतिनिधि है जो चलने के प्रकार्य का संचालक होता है। दूसरा तर्क 'स्कूल' वाक्य के पूर्वसर्गीय पदबंध (Prepositional phrase) के रूप में शामिल है। 'स्कूल' तर्क कर्ता के व्यापार के गंतव्य को दर्शाता है। उसमें चलने की क्रिया जातिवाचक संज्ञा 'स्कूल' पर समाप्त होती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह तर्क वाक्य का लक्ष्य है, जिसमें लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। साथ-साथ वह वाक्य में कर्ता का स्थान (Location) भी दर्शाता है।

वाक्य (9) में क्रिया पदबंध 'आये' के साथ दो तर्क होते हैं। वे हैं 'हम' और 'अपने घर'। जातिवाचक संज्ञा 'घर' कर्ता 'हम' के आने के व्यापार के गंतव्य को दर्शाता है। वाक्य का कर्ता कहीं से (शायद कार्यालय से) घर में आता है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि जातिवाचक संज्ञा 'घर' लक्ष्य है, जिसमें वाक्य में लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका है। यह वाक्य में कर्ता के स्थान को भी दर्शाता है।

प्राप्तकर्ता (Recipient)

कैनी (2006) प्राप्तकर्ता को एक विशेष प्रकार के लक्ष्य के रूप में परिभाषित करता है, जिसमें वाक्य में परिग्रह का परिवर्तन शामिल होता है।

10. राजेश ने अपनी पत्नी को चिट्ठी भेजी।

S.M.SNG 3R.FN N.FN.DAT.IO DRT OBJ.FN.ACC VT.PST.FN

11. उन्होंने मुझे चौथी कक्षा में प्रवेश दिया।

S.M.PRON.PLUR PRON.DAT.IO PP ACC.VT.PST.M

वाक्य (10) में 'भेजना' क्रिया के तीन तर्क होते हैं। तर्क 'चिट्ठी' जातिवाचक संज्ञा है जो किसी प्रकार की चिट्ठी हो सकती है। वह प्रत्यक्ष कर्म (Direct object) है, जिसमें कर्म कारक होता है। उसके अनुसार यह कहा जा सकता है कि 'चिट्ठी' तर्क वाक्य का आंतरिक तर्क (Internal argument) होता है और कर्म या कथ्य है। दूसरा तर्क 'अपनी पत्नी को' अप्रत्यक्ष वस्तु है, जिसमें संप्रदान कारक है, क्योंकि यह कियी वस्तु (चिट्ठी) के परिग्रह को दर्शाता है। वह वाक्य में कोई व्यापार नहीं करता, अपितु वह वाक्य में तर्क 'चिट्ठी' को प्राप्त करता है। इसलिए यह निर्धारित किया जा सकता है कि तर्क 'अपनी पत्नी को' तर्क 'चिट्ठी' का प्राप्तकर्ता है और वाक्य में उसकी प्राप्तकर्ता भूमिका है।

वाक्य (11) में क्रिया पदबंध 'प्रवेश किया' के तीन तर्क होते हैं। वे हैं— 'उन्होंने', 'प्रवेश' और 'मुझे'। पहला तर्क 'वे' वाक्य का कर्ता या पतिनिधि है और उसमें प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका होती है। दूसरा तर्क 'प्रवेश' वाक्य का आंतरिक तर्क या प्रत्यक्ष कर्म है, जिसके साथ कर्म कारक है और वह वाक्य का कथ्य है। तीसरा तर्क 'मुझे' अप्रत्यक्ष कर्म है, जिसके साथ संप्रदान कारक है। हालाँकि, यह न तो कोई व्यापार करता है और न ही वाक्य के प्रकार्य से गुजरता है, लेकिन वह ऐसा तर्क है जो 'प्रवेश' तर्क को प्राप्त करता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि तर्क 'मुझे' वाक्य का प्राप्तकर्ता है और उसमें प्राप्तकर्ता प्रसंगबद्ध भूमिका है।

स्रोत (Source)

लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका के विपरीत के रूप में स्रोत प्रसंगबद्ध भूमिका आती है। स्रोत वह प्रसंगबद्ध भूमिका है, जहाँ Is कोई वस्तु शाब्दिक या भौतिक रूप से प्रस्तावित करती है (कैनी, 2006)।

12. राजू स्कूल से घर आया।

S.M.SNGPP.ABL DAT VI.M.PST

13. राधा का अपने पति के घर से कपड़े और भोजन मिलते हैं।

FN.SNG.OC.NDIR OBJ OBL.3R.M.PC.PP.ABL DAT.PLUR VI.M.PRES.PLUR

वाक्य (12) में 'आया' क्रिया पदबंध के दो संज्ञा पदबंध और एक पूर्वसर्गीय पदबंध होते हैं। संज्ञा पदबंध वे हैं कि 'राजू' तथा 'घर'। पहला संज्ञा पदबंध 'राजू' वाक्य का कर्ता या प्रतिनिधि है, जिसके साथ वाक्य का कर्ता कारक शामिल होता है, इसलिए वह प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका धारण करता है। दूसरा संज्ञा पदबंध 'घर' वाक्य का लक्ष्य है और उसमें लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। यह दूसरा तर्क भी कर्ता का स्थान दिखाता है (वह घर जहा; पर कर्ता आ रहा है)। पूर्वसर्गीय पदबंध 'स्कूल से' की जातिवाचक संज्ञा 'स्कूल' वाक्य में क्रिया के व्यापार का स्रोत संकेत करती है। इस प्रकार, 'स्कूल' तर्क का वाक्य में अपादान कारक (**Ablative case**) है, क्योंकि यह वाक्य में स्रोत को दर्शाता है। फलस्वरूप यह कहा जा सकता है कि 'स्कूल' जातिवाचक संज्ञा व्यापार का स्रोत है और इसका वाक्य में स्रोत प्रसंगबद्ध भूमिका होती है।

वाक्य (13) में 'मिलते हैं' क्रिया पदबंध के चार तर्क और एक मानार्थ पदबंध चर्चा करने योग्य हैं। पहला संज्ञा पदबंध 'राधा को' मानार्थ कर्म (**Object complement**) या अप्रत्यक्ष वस्तु है और उसमें संप्रदान कारक रहता है। वह यह तर्क है जो वाक्य में लाभ उठाता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह तर्क वाक्य की लाभार्थी प्रसंगबद्ध भूमिका है। दूसरा तर्क 'कपड़े और भोजन' वाक्य का कथ्य होता है और उसमें वाक्य की कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। संज्ञा पदबंध और पूर्वसर्गीय पदबंध 'अपने पति के घर से' राधा की कुछ वस्तु मिलने का स्रोत दर्शाता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि यह तर्क वाक्य का स्रोत है, जहा; Is वाक्य में राधा कपड़े और भोजन पाती है, इसलिए उसमें स्रोत प्रसंगबद्ध भूमिका की अभिव्यक्ति है।

स्थान (Locative)

कैनी (2006) स्थान प्रसंगबद्ध भूमिका को उस स्थान के रूप में परिभाषित करता है, जहा; क्रिया का व्यापार होता है।

14. मैं इंद्रा गांधी विश्वविद्यालय में अपनी स्नातकोत्तर उपाधि कर रहा हूँ।

S.M.PRON.SING INESS 3R.OBJ.PN.SING.FN VT.M. SING.P.PR.CONT

15. लैला ने सरकारी कालेज में प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त किया।

S.FN.SNG INESS PP OC VI.M.PST

वाक्य (14) में क्रिया पदबंध के दो तर्क और एक पूर्वसर्गीय पदबंध होते हैं। पहला तर्क 'मैं' वाक्य का प्रतिनिधि है, जिसके साथ प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका होती है। दूसरा तर्क 'स्नातकोत्तर उपाधि' एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है जो एक उच्च कोटि की उपाधि का नाम हो सकता है। वह वाक्य का कर्म या कथ्य है, इसलिए वाक्य में उसमें कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। पूर्वसर्गीय पदबंध 'इंद्रा गांधी विश्वविद्यालय में' उस स्थान को सांकेतिक करता है, जहां तर्क 'मैं' के द्वारा उपाधि की जा रही है। उपर्युक्त पूर्वसर्गीय पदबंध की व्यक्तिवाचक संज्ञा 'इंद्रा गांधी' होती है। वह केवल उस विशिष्ट विश्वविद्यालय का नाम ही नहीं, बल्कि स्थान (Place) या अवस्थिति (Location) भी है। इसलिए कहा जा सकता है कि यह तर्क वाक्य का स्थान होता है और उसमें स्थान प्रसंगबद्ध भूमिका निर्धारित है।

वाक्य (15) में क्रिया पदबंध के साथ दो संज्ञा पदबंध और दो पूर्वसर्गीय पदबंध संबंधित हैं। पहला तर्क 'लैला ने' वाक्य का कर्ता है, जिसमें कर्ता कारक शामिल है और वाक्य की क्रिया के व्यापार को चलाने हेतु वह वाक्य का प्रतिनिधि भी है। दूसरा तर्क 'प्रवेश' वाक्य का कथ्य है, इसलिए उसमें कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। जातिवाचक संज्ञा 'सरकारी कालेज' व्यापार का स्थान होता है, जहां प्रवेश प्राप्त किया गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि 'सरकारी कालेज' तर्क वाक्य का स्थान है और उसमें स्थान प्रसंगबद्ध भूमिका दिखाई देती है।

साधन (Instrument)

कैनी (2006) द्वारा साधन प्रसंगबद्ध भूमिका की एक संक्षिप्त परिभाषा उस इकाई के रूप में दी गयी है, जिसके द्वारा क्रिया का व्यापार संपन्न होता है या जिसके द्वारा वाक्य में कोई क्रिया की जाती है।

16. लड़के ने भाई को डंडे से मारा।

S.M.SNG N.M.OBJ.DAT.IO PP VT.PST.M

17. हम बचपन में पिता जी के साथ कार गाड़ी से स्कूल जाते थे।

S.PRON.PLUR M. PP PP OC.INS N.DAT.PP VI.PST.PLUR.HAB

वाक्य (16) में क्रिया पदबंध 'मारा' के तीन तर्क होते हैं (दो संज्ञा पदबंध और एक पूर्वसर्गीय पदबंध)। पहला पदबंध 'लड़के ने' वाक्य का प्रतिनिधि है और उसमें प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका है। दूसरा तर्क 'भाई को' वाक्य का मरीज है जो संप्रदान भी होता है। जातिवाचक संज्ञा 'डंडा' वाक्य में कोई व्यापार नहीं करता। उसके स्थान पर तर्क को 'मारना' क्रिया का व्यापार करने के लिए एक साधन या उपकरण के रूप में कार्यरत होता है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि 'डंडा' तर्क 'मारना' के व्यापार का साधन है, जिसमें वाक्य में साधन प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है।

वाक्य (17) में क्रिया पदबंध 'जाते थे' के साथ दो संज्ञा पदबंध और तीन पूर्वसर्गीय पदबंध संबंधित हैं। पहला तर्क 'हम' वाक्य का प्रतिनिधि है, जिसमें कर्ता करक होता है। यह तर्क वाक्य में व्यापार के संचालक का कार्य करता है। दूसरा संज्ञा पदबंध या तर्क 'स्कूल' है जो वाक्य का लक्ष्य होता है। उसमें

लक्ष्य प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है। पूर्वसर्गीय पदबंध 'कार गाड़ी से' में जातिवाचक संज्ञा 'कार गाड़ी' वाक्य का साधन दर्शाता है। यह तर्क वाक्य में न कोई व्यापार करता है और न ही व्यापार के अधीन रहता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वाक्य का साधन, साधन की प्रसंगबद्ध भूमिका निर्धारित की जाती है।

लाभार्थी (Beneficiary)

यह वह इकाई है, जिसके लिए वाक्य में व्यापार होता है। (कैनी, 2006)

18.	पिता जी ने	मेरे लिए	गाड़ी	खरीदी।
	S.M.SNG	PP	OBJ	VT.PST.FN
19.	यह	शोध	हिंदी	से संबंधित है।
	DTR	OBJ.M	PP	COP

वाक्य (18) में क्रिया पदबंध के तीन तर्क होते हैं। पहला तर्क 'पिता जी ने' वाक्य का कर्ता या प्रतिनिधि है और उसमें प्रतिनिधि प्रसंगबद्ध भूमिका है। दूसरा तर्क 'गाड़ी' वाक्य का अप्रत्यक्ष कर्म या कथ्य है, जिसमें कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका होती है। तीसरा तर्क 'मैं' वाक्य में न कर्ता का व्यापार करता और न ही व्यापार के अधीन रहता है। वैसे भी हो, यह वह तर्क है जो प्रतिनिधि के व्यापार से लाभ उठाता है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि 'मैं' वाक्य की लाभार्थी प्रसंगबद्ध भूमिका है।

वाक्य (19) में क्रिया पदबंध 'है' योजक क्रिया है, जिसके दो तर्क होते हैं। पहला तर्क 'शोध' संज्ञा पदबंध है। वह वाक्य में कर्ता के स्थान पर होता है, लेकिन वह वाक्य का कर्ता नहीं है, क्योंकि वह वाक्य में कोई प्रकार्य नहीं करता। वह वाक्य का कथ्य है, जिसके साथ कथ्य प्रसंगबद्ध भूमिका होती है। दूसरा तर्क व्यक्तिवाचक संज्ञा 'हिंदी' है। वह वाक्य का कर्ता नहीं है जो क्रिया का प्रकार्य नहीं करता और क्रिया के अधीन भी नहीं रहता, लेकिन वह ऐसा संज्ञा पदबंध है जो वाक्य में लाभ प्राप्त करता है। यह तर्क शोध के विषय होने का लाभ उठाता है; उसका तात्पर्य यह है कि कोई हिंदी भाषा के संबंध में शोध-कार्य करता है और हिंदी भाषा वाक्य में बिना कुछ किये व्यापार का लाभ लेती है। इसलिए कहा जा सकता है कि 'हिंदी' वाक्य का लाभार्थी है और उसमें लाभार्थी प्रसंगबद्ध भूमिका शामिल है।

निष्कर्ष

हर भाषा की विभिन्न प्रकार की प्रसंगबद्ध भूमिका और उसकी संरचना उपलब्ध है जो उस विशिष्ट भाषा के तर्क-संरचना पर आधारित है। प्रस्तुत शोध का कैनी (2006) के सैद्धांतिक ढाँचे को आधार बनाकर विश्लेषण किया गया है और परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिंदी में वे सभी प्रसंगबद्ध भूमिकाएँ शामिल हैं जो कैनी द्वारा प्रास्तावित की गयी हैं। विचार-विमर्श के अंत में यह कहा जा सकता है कि हिंदी के वाक्यों की प्रसंगबद्ध भूमिकाओं का अनुक्रम ऐसा है कि प्रतिनिधि > कथ्य > भोक्ता > प्राप्तकर्ता > स्थान > लक्ष्य।

संदर्भ—सूची

- Alsina, A. & Mchombo, S. (1988). Lexical mapping in the Chichewa applicative constructions, *Technical report*, Stanford University and San Jose State University, Stanford.
- Asher, N. & Lascarides, A. (1993). Lexical disambiguation in a discourse context, *Technical report*, Centre for Cognitive Science, University of Edinburgh, Edinburgh.
- Babby, L. H. (2009). *The Syntax of Argument Structure*. Cambridge: Cambridge University Press.
- Beames, J. (1872). *A Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India: To Wit, Hindi, Panjabi, Sindhi, Gujarati, Marathi, Oriya, and Bangali. On sounds* (Vol. 1). Trübner.
- Bresnan, J. & Kanerva, J. (1988). Locative inversion in Chichewa: A case study of factorization in grammar, *Technical report*, Stanford University and Xerox PARC, Stanford.
- Butt, M. (2006). *Theories of case*. Cambridge, UK: Cambridge Univ. Press.
- Campe, P. (1994). *Case, semantic roles, and grammatical relations: A comprehensive bibliography*. Amsterdam: John Benjamins.
- Chierchia, G. (1999) *Syntax-semantics interface*, pp. 824-826, in: *The MIT Encyclopedia of the Cognitive Sciences*, Edited by Keil & Wilson (1999) Cambridge, MA: The MIT Press.
- Chomsky, N. 1982. Some concepts and consequences of the theory of government and binding. Cambridge, Mass: MIT Press.
- Chomsky, N. 1986. *Barriers*. Cambridge, Mass: MIT Press
- Chomsky, N. (1955). *The logical structure of linguistic theory*, Plenum, New York. Published in 1975.
- Chomsky, N. (1965). *Aspects of the theory of syntax*, The MIT Press, Cambridge, Ma.
- Chomsky, N. (1981). *Lectures on government and binding*, Foris Publications, Dordrecht.
- Chomsky, N. (1986a). *Barriers*, The MIT Press, Cambridge, Ma.
- Chomsky, N. (1986b). *Knowledge of language: Its nature, origin and use*, Praeger, New York.
- Chomsky, N. (2014). *Aspects of the Theory of Syntax* (Vol. 11). MIT press.
- Chomsky, N. (1981). Lecture on government and binding. Dordrecht: Foris.
- Chomsky, N., & Lightfoot, D. W. (2002). *Syntactic structures*. Walter de Gruyter.
- Davis, A. (1996). *Lexical semantics and linking in the hierarchical lexicon*, D. Reidel, Dordrecht.
- Davis, Anthony R. (2011). Thematic roles. In *Semantics: An international handbook of natural language meaning*. Vol. 1. Edited by Claudia Maienborn, Klaus von Stechow, and Paul H. Portner, 399–420. Berlin: Mouton de Gruyter.
- Dowty, D. (1982b). More on the categorial analysis of grammatical relations, *Ohio State University Working Papers in Linguistics* **26**: 102-133.
- Dowty, D. (1987). Thematic proto roles and argument selection, *Language* **67**: 547-619.
- Dowty, D. (1989). On the semantic content of the notion 'thematic role', in G. Chierchia, B. Partee & R. Turner (eds), *Property theory, type theory and natural language semantics*, D. Reidel, Dordrecht.

- EAGLES (1996). Synopsis and comparison of morphosyntactic phenomena encoded in lexicons and corpora. A common proposal and applications to european languages, *Technical Report EAG-LWG-Morphsyn*, ILC-CNR, Pisa. Available at: <http://www.ilc.cnr.it/EAGLES96/morphsyn/morphsyn.html>.
- Ernst, T. 2006. *The Syntax & Adjuncts*. Cambridge: Cambridge University Press.
- Fillmore, C. (1968). The case for case, in E. Bach & R. Harms (eds), *Universals in linguistic theory*, Holt, Rinehart and Winston, New York.
- Freidin, R. 1992. *Foundation of Generation Syntax*. Cambridge. Mass: MIT Press.
- Hackl, M. (2013) *The syntax–semantics interface*. *Lingua*, 130, 66-87.
- Jackendoff, R. (1972). *Semantic interpretation in generative grammar*, The MIT Press, Cambridge, Ma.
- Jackendoff, R. (1987). The status of thematic relations in linguistic theory. *Linguistic inquiry*, 18(3), 369-411.
- Lohndal, T. (2006). The phrase structure of the copula. *Working papers in Scandinavian syntax*, 78, 37-75.
- Mohanan, T. (1994). *Argument structure in Hindi*. Center for the Study of Language (CSLI).
- Radford A. 1997. *Syntax: A minimalist introduction*. Cambridge University Press.
- Sanfilippo, A. (1995b). Thematic roles: Diathesis/sense alternations and argument selection, *Paper presented at the 1995 HPSG Workshop*, Tübingen.
- Shapiro, M. C. (1989). *A primer of modern standard Hindi*. Motilal Banarsidass Publishe.
- Tiwari, B. (1966). *The Hindi Language*. Allahabad: Kitab Mahal.
- Wilkins, W. (2020). *Thematic relations* (Vol. 21). Brill.